विश्व इतिहास के कुछ विषय

कक्षा-11

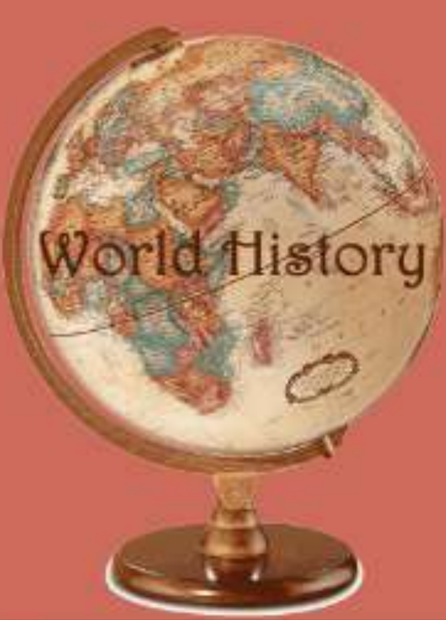

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

विश्व इतिहास के कुछ विषय

कक्षा-11

2018 & 19

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित)
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ द्वारा स्वीकृत

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING CHHATTISGARH

मूल्य -` 160.00

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के निमित्त

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

संस्करण - 2018

आवरण पृष्ठ सज्जा
रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रणालय
....

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ....
(आवरण पृष्ठ 220 जी.एस.एम. एवं आंतरिक पृष्ठ 80 जी.एस.एम. कागज पर मुद्रित)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है, अवसर की असमानता को कम करना। शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना। मौजूदा आधारभूत सुविधाओं का बेहतर उपयोग करना। शिक्षा का स्तर सुधारना तथा शिक्षा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को महत्व देना। इन्हीं आधारभूत तत्वों को ध्यान में रखते हुए शिक्षाविदों ने हर क्षेत्र में जनहित के लिए शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम तैयार करने की कोशिश की है जिसे हर प्रांत (राज्य) में लागू करके ही हम अपने देश में अपनी भावी पीढ़ी के लिए और उनके लाभ के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं और उनको एक ही प्रकार की शिक्षा देकर उनका आपस में मुकाबला करवा के उनसे अपने देश, अपने राज्य के प्रति एक सकारात्मक सोच उत्पन्न कर शिक्षा का स्वप्न साकार कर सकते हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग के निर्णयानुसार अप्रैल 2018 से राज्य की उच्चतर माध्यमिक कक्षा ग्यारहवीं हेतु लागू किया गया है।

विविधता में एकता इस देश की परम्परा रही है। इस परम्परा को कायम रखते हुए शिक्षा के स्तर को उठाने के लिए तथा अन्य देशों के साथ विकास के आयाम पूरे करने के लिए छत्तीसगढ़ राज्य में अध्ययनरत उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा भारत सरकार द्वारा समय-समय पर राज्यों को एक ही राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम स्वीकृत करने व एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को प्रदेश में लागू करने के लिए कहा जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि 2017 से राष्ट्रीय स्तर पर मेडिकल प्रवेश परीक्षा का होना इसी बात का परिचायक है। भविष्य में तकनीकी परीक्षाओं के लिए भी ऐसा सोचा जा सकता है। पुनश्च कक्षा 12 वीं के बाद होने वाली अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन सी.बी.एस.ई. द्वारा किया जाता है तथा सी.बी.एस.ई. द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों से ही प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः राष्ट्रीय स्तर पर ली जाने वाली परीक्षाओं के लिए पढ़ाई हेतु भी एक जैसी सामग्री का होना आवश्यक है।

इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषयक पाठ्यपुस्तकें, जिसे छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा नवीन आवरण पृष्ठ की डिजाइनिंग कर मुद्रित किया गया है, को छत्तीसगढ़ राज्य में पाठ्यपुस्तक के रुप में स्वीकार किया गया है। कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत छात्रों के लिए स्वीकृत एन.सी.ई.आर.टी. की ये पुस्तकें

छत्तीसगढ़ राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होंगी। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक तथा प्रकाशन विभाग के प्रति हम आभारी हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों के लिए त्वरित स्वीकृति व बहुमूल्य मार्ग निर्देशन देकर पुस्तक की गुणवत्ता विकास व सुधार हेतु आवश्यक सुझाव एवं सहयोग प्रदान किया है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक, ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धि स्तर की वृद्धि में सहायक सिद्धि होगी, यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की सम्भावनाएँ सदैव भविष्य के लिए संचित रहती हैं, फिर भी प्रकाशन एवं मुद्रण में निरन्तर अभिवृद्धि करने के प्रति निष्ठा एवं समर्पण के साथ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ के छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं शिक्षाविदों की टिप्पणियों तथा बेशकीमती सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे छत्तीसगढ़ राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम लब्धप्रतिष्ठित होने में हमारा लघु प्रयास सहायक सिद्धि हो सके। समस्त छात्र-छात्राओं की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विश्व इतिहास का अध्ययन

आप सोच रहे होंगे कि एक ही वर्ष के अंदर विश्व इतिहास का अध्ययन कैसे संभव है? आखिर, विश्व के विभिन्न देशों में इतना कुछ हुआ और प्रत्येक देश के बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है। इतने विस्तृत व असीम संग्रह से कुछ विषयों को ही हम अध्ययन के लिए कैसे चुन सकते हैं?

ये जायश सवाल हैं। विश्व इतिहास पर किसी पुस्तक को पढ़ने से पहले हमें इन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए। किसी भी पाठ्यक्रम से यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसकी रचना किस प्रकार हुई है। इसी तरह से एक किताब से यह साफ होना चाहिए कि उसके क्या उद्देश्य हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि इतिहास के अध्ययन अथवा लेखन में इतिहासकार सदैव तरह-तरह के चयन करता है। कई दशकों पहले ई.एच. कार ने इसी बात को अपनी उत्कृष्ट पुस्तक इतिहास क्या है में उठाया है। किसी पुराने अभिलेखागार में दस्तावेशों के ढेरों की जाँच-पड़ताल कर इतिहासकार उन तथ्यों को नोट करता है जो उसे महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं। वह अन्य जगहों के अभिलेखागारों से प्रमाण एकत्रित करता है और विभिन्न प्रमाणों व तथ्यों में अंतर्सबंध् स्थापित करने का प्रयास करता है। न तो वह उन सभी चीशों को उतार सकता है जिसे उसने पढ़ा है और न ही वह हर प्रमाण का प्रयोग कर सकता है। जो प्रमाण उसे महत्त्वपूर्ण नहीं लगते उन्हें वह छोड़ देता है। बाद में कोई अन्य इतिहासकार उन्हीं स्रोतों को नए प्रश्नों के साथ पढ़ता है। नए इतिहासकार को अब कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिन्हें पहले अनदेखा कर दिया गया था। वे इन प्रमाणों की व्याख्या करती हैं, नए अंतर्सबंध् कायम करती है और इस तरह से इतिहास की एक नयी किताब लिख डालती हैं।

चयन की यह प्रक्रिया इतिहास लेखन में अंतर्निहित रही है। इसलिए इतिहास पढ़ते समय यह देखना आवश्यक है कि इतिहासकार कैसी घटनाओं के बारे में लिख रहा है तथा कैसे उनकी व्याख्या कर रहा है। हमें इतिहासकार के प्रमुख तर्क और उसकी सोच के ढाँचे को जानना जरूरी है जिसके जरिए वे किन्हीं विशेष घटनाओं को समझता है।

हाल तक हम जो इतिहास पढ़ते आए हैं आमतौर पर वह आधुनिक पश्चिम के उदय की कहानी रही है। यह कहानी निरंतर प्रगति और विकास की थीः विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बाशार व व्यापार, तर्क तथा तर्कणावाद, आजादी और स्वतंत्राता के विस्तार की। अक्सर किन्हीं विशेष घटनाओं का इतिहास पश्चिम की विजयी यात्रा की बड़ी कहानी का ही हिस्सा था। समस्त विश्व में साम्राज्यवादी प्रभुत्व अतीत की इसी अवधरणा पर आधरित था। पश्चिम अपने को इस प्रगति का अग्रदूत मानता था। वह यह मानता था कि विश्व को सभ्य बनाना, सुधर करना व करवाना, विभिन्न देशों के मूल निवासियों को शिक्षित करना, व्यापार व बाजारों का विस्तार करना उसकी ख़ास ज़िम्मेवारी है।

क्या आज हमें इस समझ के बारे में प्रश्न नहीं उठाने चाहिए? ऐसा करने के लिए हमें विश्व इतिहास को फिर से देखना होगा। कई महाद्वीपों और लम्बे ऐतिहासिक कालों का सफर करते हुए हमें यह सोचना होगा कि विश्व इतिहास को नए तरीके से देखा जा सकता है। इस यात्रा में विश्व इतिहास के कुछ विषय आपकी मदद करेगी।
ऐसा यह तीन तरीकों से करेगी।

सबसे पहले यह पुस्तक विकास और प्रगति की महान कहानियों के पीछे छुपे ज़्यादा 'अँधे्रे' इतिहासों से आपका परिचय कराएगी। आप देखेंगे कि कैसे पंद्रहवीं, सोलहवीं शताब्दियों में दक्षिण अमरीका में अन्वेषकों और व्यापारियों के आगमन ने केवल पश्चिमी वाणिज्य और संस्कृति के लिए अपने द्वार ही नहीं खोले बल्कि इससे वहाँ विभिन्न तरह की बीमारियाँ फैलीं, सभ्यता का विनाश हुआ और आबादियों का खात्मा हो गया (विषय 8)। बाद में उत्तरी अमरीका व ऑस्ट्रेलिया में गोरों के बसने का परिणाम केवल प्रगति नहीं (विषय 10) रहा। इन स्थानों में आधुनिक पूँजीवादी विकास के इतिहास के पीछे मूल निवासियों के विस्थापन व जन-संहार की भयानक कहानियाँ हैं।

फिर जब आप अनुभाग दो में राज्यों व साम्राज्यों के निर्माण के बारे में पढ़ेंगे तो पाएँगे कि वह कहानी केवल रोम (विषय 3) यानि कि यूरोप की नहीं है बल्कि मध्य इस्लामिक राज्यों (विषय

4) एवं मंगोलों के क्षेत्रों की (विषय 5) भी है। इन अध्यायों से आपको पता चलेगा कि इन जगहों पर समाज व राजनीतिक व्यवस्था अलग ढंग से संगठित थी।

यह पुस्तक अनुभाग चार में आधुनिकीकरण के विभिन्न रास्तों के बारे में भी आपको बताएगी। आप जानते होंगे कि औद्योगीकरण सबसे पहले ब्रिटेन में हुआ। एक ज़माने में यह माना जाता था कि अन्य देशों ने विभिन्न तरीकों से ब्रिटिश मॉडल का ही अनुकरण किया। इसलिए अन्य देशों में औद्योगीकरण से जुड़े विकास को ब्रिटिश मॉडल के हिसाब से ही परखा जाता रहा। ऐसा तर्क फिर से पश्चिम को विश्व केंद्र के रूप में देखता है। लेकिन आज हम यह जानते हैं कि सारी रचनात्मकता पश्चिम से ही नहीं आई। दूसरी ओर यह कहना भी उचित नहीं होगा कि विश्व घटनाओं पर पश्चिम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, या फिर प्रत्येक देश के इतिहास को अलग-थलग कर देखना चाहिए, या फिर हमें विकास की देशज जड़ों का ही परीक्षण करना चाहिए। ऐसा परिप्रेक्ष्य सीमित होगा और यह एक तरह की संकीर्णता पैदा करेगा। इसकी जगह हमें यह जानना आवश्यक है कि विभिन्न देशों में लोग अपनी दुनिया बनाने के लिए रचनात्मक तरीकों से काम करते रहे हैं और इन क्रियाकलापों का प्रभाव अन्य देशों और यूरोप सहित अन्य महाद्वीपों पर पड़ा है। विषय सात में आप देखेंगे कि पुनर्जागरण युगीन यूरोप की सांस्कृतिक गतिविधियों पर दुनिया के अन्य देशों में होने वाली घटनाओं का भी बहुत प्रभाव पड़ा।

इस पुस्तक में आपकी यात्रा आरंभिक मानव समाज (विषय 1) तथा आरंभिक नगरों (विषय 2) के विकास से शुरू होगी। आप फिर देखेंगे कि दुनिया के तीन अलग हिस्सों में कैसे बड़े राज्य-साम्राज्य विकसित हुए और इनको कैसे संगठित किया गया (अनुभाग दो)। अगले अनुभाग में आप देखेंगे कि कैसे नौवीं व पंद्रहवीं शताब्दियों के बीच यूरोपीय समाज व संस्कृति में बदलाव आया और, दक्षिणी अमरीका के लोगों के लिए यूरोपीय विस्तार का क्या अर्थ (अनुभाग तीन) था। अंततः आप आधुनिक विश्व के जटिल निर्माण का इतिहास पढ़ेंगे (अनुभाग चार)। आपको ये सभी अध्याय इन विषयों के विवादों से परिचित करवाएँगे ताकि आप समझ सकें कि इतिहासकार पुराने मुद्दों पर कैसे निरंतर पुनर्विचार करते रहते हैं।

प्रत्येक अनुभाग एक परिचय व कालरेखा से शुरू होता है। परीक्षा के लिए इन तिथिक्रमों को याद रखना ज़ारूरी नहीं है। इनके द्वारा यह बताया गया है कि एक खास समय पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में क्या हो रहा था। इनसे आपको विभिन्न जगहों के सापेक्षिक इतिहास को जानने में मदद मिलेगी।

कालरेखाएँ बनाना एक कठिन काम है। किसी भी कालरेखा में हम किन तिथियों को शामिल करते हैं? इस पर हमेशा इतिहासकार एकमत नहीं रहे हैं। वास्तव में अगर आप एक ही काल से संबंधित विभिन्न पुस्तकों में दिए गए तिथिक्रमों की तुलना करें तो आप शायद पाएँगे कि उन सभी के मुख्य मुद्दे भिन्न हैं। इसलिए हमें प्रत्येक तिथिक्रम को आलोचनात्मक ढंग से पढ़ना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि कोई भी तिथिक्रम हमें क्या बताता है और क्या नहीं बताता है। कालरेखाएँ विशिष्ट रूप से इतिहास की रूपरेखा निर्धारित कर देती हैं।

इस वर्ष आप दक्षिण एशिया के इतिहास के बारे में नहीं पढ़ रहे हैं। अगले वर्ष की पुस्तक भारतीय इतिहास से जुड़े विषयों पर होगी। इन वर्षों (कक्षा 11 व 12) में आप विश्व इतिहास की निर्णायक घटनाओं और प्रक्रियाओं के बारे में ही नहीं बल्कि ये भी जानेंगे कि इतिहासकार अतीत के बारे में अपनी समझ कैसे बनाते हैं? आप देखेंगे कि वे किन स्रोतों का प्रयोग करते हैं और उन्हें कैसे समझते हैं। आप यह भी जानेंगे कि ऐतिहासिक ज्ञान विवादों व पुनर्व्याख्याओं के द्वारा कैसे बनता है।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार, इतिहास

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, समाज विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सलाहकार

नारायणी गुप्ता (अवकाशप्राप्त प्रोफेसर), इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली (विषय 10)

सदस्य

अरूप बनर्जी, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 9)
अनिल सेठी, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
चित्र श्रीनिवासन, वरिष्ठ अध्यापिका, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली
जयरस वाणाजी, विजिटिंग प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 3)
नजफ हैदर, एसोसिएट प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 4)
बीबा सोब्ती, वरिष्ठ अध्यापिका, मॉडर्न स्कूल, नयी दिल्ली
ब्रिज तंखा, प्रोफेसर, पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 11)
भास्कर चक्रवर्ती, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता (विषय 7)
रजत दत्त, प्रोफेसर, ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 6)
रीतू सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
लक्ष्मी सुब्रमण्यम, प्रोफेसर, पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र, कोलकाता (विषय 8)
सुनील कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 5)
सुप्रिया वर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद (विषय 1)
शीरीन रत्नागर (अवकाशप्राप्त प्रोफेसर), इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 2)

हिंदी अनुवाद

अनिल सेठी, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
परशुराम शर्मा, भूतपूर्व निदेशक (राजभाषा), भारत सरकार
प्रत्यूष कुमार मंडल, एसोसिएट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
राजेन्द्र प्रसाद तिवारी (अवकाशप्राप्त अनुसंधन अधिकारी), इतिहास एवं पुरातत्त्व, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली
रीतू सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
संजीव कुमार, हिंदी विभाग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सीमा एस. ओझा, असिस्टेंट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

प्रत्यूष कुमार मंडल, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक लोगों ने उसके अध्यायों को पढ़कर, चित्र एवं लेखन सामग्री प्रदान कर, उसकी बनावट और सज्जा की कल्पना करने में और उसके अनुवाद और कॉपी संपादन में सहयोग दिया है।

कुमकुम रॉय ने इस पुस्तक के बनने की प्रक्रिया में अनेक रूपों में मदद की है। निहारिका गुप्ता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया और साहित्यिक संदर्भ बताए। पुस्तक के विशिष्ट अध्यायों पर अपनी टिप्पणियों के लिए हम एलन माएने, डॉन ओ कॉनर, जया मेनन, पार्थो दत्ता, पीटर मेयर और फिलिप ओलडनबर्ग के आभारी हैं। हम प्रीति गुप्ता दीवान, बजरंग बिहारी तिवारी, शिखा सेठी, संजय शर्मा, अरुणा बेरी, योगेन्द्र दत्त और उमेश के भी आभारी हैं जिन्होंने हिंदी पाण्डुलिपि के पुनरावलोकन में सहयोग दिया। कुसुम बाँठिया को हम विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अनुवाद से जुड़ी अनेक नाजुक समस्याओं को पल में हल किया।

इस पुस्तक के मानचित्रों के निर्माण में सहायता करने के लिए हम देविका सेठी के आभारी हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अखिला यैचुरी, अनीष विनायक, दीपाश्री बॉल, निहारिका गुप्ता, पल्लवी राघवन व पार्थ शील के योगदान के लिए हम उन्हें विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं।

पाठ्यपुस्तक के वर्तमान संस्करण में 'कोरिया की कहानी' शीर्षक से एक खंड जोड़ा गया है। इसके लिए हम ली वार बोम, प्रोफेसर ऑफ़ पॉलीटिक्स, सेंटर फ़ॉर इंटरनेशनल अफेयर्स, दि एकेडमी ऑफ़ कोरियन स्टडीश, सिओल, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया और चो यंग जुन, प्रोफेसर ऑफ़ इकोनॉमिक्स, सेंटर फ़ॉर इंटरनेशनल अफेयर्स, दि एकेडमी ऑफ़ कोरियन स्टडीश, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

परिषद् की ओर से डी.टी.पी. ऑपरेटर अरविंद शर्मा, विजय कुमार तथा कॉपी एडिटर विजय कुमार शर्मा, विभूति नाथ झा तथा प्रूफ रीडर सीमा यादव ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

चित्रों के लिए आभार

विलियम ए. टर्नबॉग, रॉबर्ट जरमेन, लिन किलगोर, हैरी नेलसन, अंडरस्टैडिंग फिशिकल ऐंथ्रोपोलॉजी एंड आखकओलॉजी, वैड्स्वर्थ/थॉमसन लर्निंग, बेलमॉन्ट, 2002 (पृष्ठ 1,9,11,19 और 28 के चित्रों के लिए)

जे. बोर्डमैन, जे. ग्रिफिन, ओ. मर्रे, ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ दि क्लासिकल वर्ल्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवखसटी प्रेस, 1991 (पृष्ठ 61, 63, 66 और 69 के चित्रों के लिए)

बारबारा ब्रेंड, इस्लामिक आर्ट, ब्रिटिश म्यूजियम प्रेस, 1991 (पृष्ठ 80 और 96 के चित्रों के लिए)

बर्नार्ड लेविस, इस्लाम, टेम्स एंड हडसन, 1992 (पृष्ठ 79, 91, 92 और 97 के चित्रों के लिए)

एम. हट्सटाइन और पी. डेलियस (संपादित), इस्लामः आर्ट एंड आकिटेक्चर, कोनमैन, 2000 (पृष्ठ 90, 95, 100, 101, 121 के चित्रों के लिए)

पी. गे एवं टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, एज ऑफ एनलाइटेनमेंट, एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

पी.बी. एब्री, दि केम्ब्रिज इलस्ट्रेटेड हिस्ट्री ऑफ चाइना, केम्ब्रिज यूनिवखसटी प्रेस, 1996 (पृष्ठ 244 के चित्रों के लिए)

जोनाथन डी. स्पेंस, दि सर्च फॉर मॉडर्न चाइना, सेंचुरी हचिन्सन, 1990 (पृष्ठ 247, 250 और 252 के चित्रों के लिए)

जे. कोलटन व टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, ट्बेन्टीएथ सेंचुरी, एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, प्रिंट्स एवं फोटोग्राफ्स प्रभाग, वॉशिंगटन डी.सी. (पृष्ठ 224, 139 के चित्रों के लिए)

नेशनल जिओग्राफिक, दिसंबर 1996, फरवरी 1997 (पृष्ठ 108, 110, 113, 116, 121 के चित्रों के लिए)

विषय सूची

आमुख ______ *III*

प्रस्तावना ______ *V*

अनुभाग एक - प्रारंभिक समाज

भूमिका ______ 2

कालक्रम एक - (6 लाख वर्ष पूर्व से 1 ई.पू.) ______ 4

विषय 1: समय की शुरुआत से ______ 8

विषय 2: लेखन कला और शहरी जीवन ______ 29

अनुभाग दो - साम्राज्य

भूमिका ______ 50

कालक्रम दो - (लगभग 100 ई.पू. से 1300 ईसवी) ______ 54

विषय 3: तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य ______ 58

विषय 4: इस्लाम का उदय और विस्तार-लगभग 570-1200 ई. ______ 77

विषय 5: यायावर साम्राज्य ______ 104

अनुभाग तीन - बदलती परंपराएँ

भूमिका ______ 124

कालक्रम तीन - (लगभग 1300-1700) ______ 128

विषय 6: तीन वर्ग ______ 132

विषय 7: बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ ______ 152

7 (1): बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ (दक्षिण कोसल संदर्भित) 260

विषय 8: संस्कृतियों का टकराव ______ 168

अनुभाग चार - आधुनिकीकरण की ओर

भूमिका ______ 186

कालक्रम चार - (लगभग 1700-2000) ______ 189

विषय 9: औद्योगिक क्रांति ______ 196

विषय 10: मूल निवासियों का विस्थापन ______ 213

विषय 11: आधुनिकीकरण के रास्ते ______ 231

निष्कर्ष ______ 264